लोक साहित्य

डा. हीरालाल शुक्ल

शबर जाति की अपनी बोली होती है

छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में निवास करने वाली शबर जाति की अपनी बोली है। इनके बोलने वाली की संख्या बहुत कम है। भाषा विज्ञान की दृष्टि से शबर आग्नेय परिवार की मुंडा शाखा की एक विस्मृत प्राय बोली है। हार्नली ने छत्तीसगढ़ के प्राचीन भाग की एक महत्वपूर्ण बोली के रूप में उसे मान्यता दी है तथा प. लोचन प्रसाद पाण्डेय ने छत्तीसगढ़ी भाषा की संरचना में उसके प्रभाव को रेखांकित किया है। मुंडा वर्ग की अन्य बोलियों में चिक और नगेशिया का भी छत्तीसगढ़ में प्रचलन है। किन्तु यह अधिक प्रभावी नहीं है। यह अवशिष्ट बोलियां सरगुजा एवं जशपुर जिले में जहां इन जातियों का निवास है बोली जाती हैं। कहीं कहीं पश्चिमोत्तर छत्तीसगढ़ में ' हो ' बोली का भी व्यवहार होता है। कुल मिलाकर निषाद वर्ग की बोलियां यद्यपि अभी जातीय व्यवहारों में प्रचलित है तथापि यह अपना अस्तित्व खोती जा रही है और बहु प्रचलित छत्तीसगढ़ी या उसके किसी रूप के साथ सम्मिश्रण होकर विलुप्त होती जा रही है। मुंडा भाषाएं सामान्यतः प्रत्यय एवं उपचय प्रधान होती हैं, जिसकी समता तुर्की भाषा से की जाती है। इनके पदांतो में व्यंजनों का उच्चारण श्रुतिहीन होता है। तथा मुंडा भाषाओं के संज्ञा पदों में स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग का विधान होता है। समस्त सजीव संज्ञा पदों के लिए पुल्लिंग तथा निर्जीव पदार्थों के लिए स्त्रीलिंग का मान होता है। इनमें प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं की तरह तीन वचन होते हैं और क्रियापदों में ' पर ' प्रत्यय नहीं होते, इनमें अंतः प्रत्यय लगाए जाते हैं।

परम्परा

भागेश्वर पात्र

बस्तर में राजकीय तंत्र का निर्वहन आज भी विधिवत

बस्तर की प्राचीन राजधानियों में से एक बड़े डोंगर हल्बा समाज का प्राचीन मुख्यालय है। अन्य समाज से हल्बाओ में संगठन क्षमता, सैन्यवृति और नेतृत्व गुणों के आधिक्य के कारण यह सदैव राजाओं के भरोसेमंद रहे। इन्हीं गुणों के कारण राजाओं को हमेशा भय रहता था कि कहीं अन्य जातियों को हल्बा शासन के विरुद्ध विपल्व के लिए बाध्य न कर दें। अन्नमदेव से लेकर कमलचंद्र भंजदेव तक बस्तर के सभी राजाओं का राजतिलक बड़े डोंगर में ही हुआ। जिस पत्थर पर नए राजा को बिठा कर राजतिलक की जाती है उस पत्थर को ' गादी पखना ' नाम से जाना जाता है। बस्तर और कांकेर के राजाओं का राजतिलक हल्बा सरदारों द्वारा ही सम्पन्न करने की प्राचीन परम्परा है। काकतीय शासन काल से पूर्व नल नागवंशी काल से ही हल्बा अधिकांश देवी देवताओं के पुजारी हैं। बस्तर दशहरा में राजाओं के क्षत्र और तलवार लेकर हल्बा ही चलते हैं। यह पर्व निर्विघ्न संपन्न हो इस कारण नौ दिनों तक उपवास रहकर हल्बा जाति का सदस्य ही जोगी बनकर योग साधना में लीन रहता है। बस्तर रियासत में महत्वपूर्ण ' नाईक ' के पद पर राजा द्वारा हल्बा को ही नियुक्त करने की परम्परा है।

ऐतिहासिक

डा. रामकुमार बेहार

गांगेय देव के बाद महाप्रतापी कर्ण बैठा गद्दी पर

कोसल राज में कल्चुरी शाखा में गांगेय देव की मृत्यु के बाद महाप्रतापी कर्ण गद्दी पर बैठा। वह पिता से बढ़ प्रतापी था। उसने पूर्वी बंगाल पर आक्रमण कर विजय प्राप्त की। दक्षिण भारत के पल्लव, चोल और कुंतल को परास्त किया। कांगड़े के कीरो को सुग्गा को नाई अपने पिंजरे के अंदर से बाहर आने की हिम्मत न पड़ी और पंजाब के हूणों का प्रहर्ष लुप्त हो गया। उसने चंदेलों पर चढ़ाई कर उन्हें राज्यच्युत कर दिया। मालवा पर आक्रमण कर भोज से राजभोज छीन लिया। कन्नौज को अपने अधीन कर लिया। मगध पर उसने दो बार धावा किया।

चंदेल राजा कीर्तिवर्मन ने कर्ण को हराया। मालवा के उदयादित्य ने लड़ाई कर अपना राज्य बंधन मुक्त किया। जीते जी अपना राज्य उसने अपने पुत्र यश को सौंप दिया। त्रिपुरी के पास कर्णवती नामक उसने नगरी बनाई। इस प्रकार लगातार विजय प्राप्त होने से उसे हिन्दू नेपोलियन की पदवी दी गई। उसके जीते हुए प्रदेश एक के बाद एक निकलने लगे। कल्चुरी वंश में कर्ण एक सर्वश्रेष्ठ राजा माना जाता था। उस काल में उसकी बराबरी का सेनापति भारत वर्ष में नहीं था। अपने राज्य काल में पूर्वार्ध में उसे सर्वेयर विजय प्राप्त होती गई थी। जब उसे विश्वास हो गया कि मुसलमानों के आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए भारत में एक बलशाली केंद्रीय सत्ता की आवश्यकता है तब उसने भारत में अपना एक छत्र साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास किया। दुर्भाग्यवश उसे सफलता नहीं मिली, फिर भी उनका महत्व कम नहीं हुआ।

भारत का अनन्योश्रित संबंध विविध ऋतुओं और मासों से रहा है। भारत की हृदयभूमि में स्थित छत्तीसगढ़ इससे अछूता नहीं रहा है, उसे ज्येष्ठ मास की दिव्यता का एहसास रहा है। सनातन धर्म में ज्येष्ठ मास का अपना अलग ही महत्व रहा है। हिन्दू पंचांग के अनुसार तीसरा महीना जेठ होता है,जिसे ज्येष्ठ भी कहा जाता है। नक्षत्र की दृष्टि से 'ज्येष्ठा' का आशय- 'सबसे बड़ी' जो समृद्धि और शुभ्रता की देवी लक्ष्मी की बड़ी बहन, जिसे विरोधी मानी गई है। ज्येष्ठ मास जहां एक ओर भयप्रद होता है वहीं दूसरी ओर सुखप्रद भी सिद्ध हुआ है।

अंचल में ज्येष्ठ माह का महत्व

संस्कृतिः डा. राघवेन्द्र कुमार राज

जेठ की तपती दुपहरी।
मौत बनके है खड़ी ।
दुख देते हैं ये बड़े घनेरे।
ज्ञान निकाल देती है बेमुरव्वत थपेड़े ।

ग्रीष्म की प्रचंडता और सूर्य की शक्ति मत्ता ज्येष्ठ मास को जटिल बना देती है। फिर भी पृथ्वी पुत्रों की कर्मठता के समक्ष जेठ का महीना पराजय स्वीकार कर लेता है और किसी भला मानुष की तरह 'जल - संरक्षण' और 'जल -दान 'का अमृत संदेश देने से चुकता नहीं है। तब एक बार फिर 'दिनकर जी' की काव्य कृतियां प्राणवान बन जाती हैं।-

जेठ हो कि हो पूस,
हमारे कृषकों आराम नहीं है।
छूटे कभी संग बैलों का,
ऐसा कोई याम नहीं है।

जेठ का महीना लौकिक जगत में ज्येष्ठ पुत्र और पुत्रियों को ऊँचा मान -सम्मान का अधिकारी बना देता है। मां- बाप ज्येष्ठ पुत्र और पुत्रियों के नाम से आवाज़ देते नज़र आते हैं। बटवारे में जेठासी भी दे जाते हैं।

जेठ का महीना आध्यात्मिक जगत में लोगों को भक्ति, शक्ति और आशीर्वाद के उत्तराधिकारी बनने का सुखद पड़ाव भी देता है। ज्येष्ठ मास अखंड सौभाग्यवती होने का सुख व्रती स्त्रियों को 'वट सावित्री व्रत ' के माध्यम से दे जाता है तो कहीं अमरत्व, मोक्ष, सुख, शांति और समृद्धि के अधिकारी घोषित कर देता है।

ज्येष्ठ मास की महिमा अनूठी है,जिन्होंने अपने हृदय- संसार में दिव्य गाथाओं को छिपाए रखे हैं। जेठ का महीना हनुमान जी, श्रीराम जी, सूर्य और शनि देव की जीवन-गाथाओं से जुड़ा हुआ महीना है। रामायण काल में इसी महीने में हनुमान जी और श्रीराम जी से वनवास काल में सीता अन्वेषण के दौरान एक विप्र वेशधारी हनुमान जी से पहली मुलाकात हुई थी। वह दिन मंगलवार था।

₹आगे चले बहुरि रघुराया।
ऋष्यमूक पर्वत निअराया।
तहं रहि सचिव सहित सुग्रीवा।
आवत देखि अतुल बलसींवा ।

महाभारत काल में जब पांडव पुत्र भीम को अपनी शक्ति और सामर्थ्य पर अभिमान हुआ। तब रामभक्त हनुमान जी ने बूढ़े बानर के रूप में भीम को परास्त किया। वह दिन ज्येष्ठ मास का अंतिम मंगलवार था।जिसे 'बड़ा मंगल' या 'बूढ़े मंगल' के रूप में जाना गया।

हनुमान जी ने प्रभु श्रीराम जी का संदेश पहुंचाने हेतु दूत बनकर लंका यात्रा की। लंकाधीश रावण ने अहंकार में हनुमान जी की पूँछ पर आग लगा दी थी। रावण के अभिमान का मर्दन करते हुए हनुमान जी ने पूरी सोने की लंका में आग लगा दी।यह घटना भी ज्येष्ठ मास की मंगलवार को घटित हुई थी।

हनुमान जी को अमरत्व का वरदान भी ज्येष्ठ मास की अंतिम मंगलवार को प्राप्त हुआ था। ज्येष्ठ मास की अमावस्या को ही भगवान शनि देव का जन्म हुआ था।

ज्येष्ठ मास की शुक्लपक्ष दसमीं को राजा भगीरथ के अथक प्रयास से गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई, जो तिथि 'गंगा दशहरा' के रूप में प्रख्यात है।

महाभारत काल में पांडव पुत्र भीम ने निर्जला एकादशी का व्रत रखा। फलतःभीम को मोक्ष और दीर्घायु होने का वरदान प्राप्त हुआ,जिसे 'भीमसेनी एकादशी' के रूप में जाना जाता है। इसके अलावा कुछ लौकिक मान्यताएं भी प्रचलित हैं। जैसे ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठा नक्षत्र, ज्येष्ठ पुत्र और पुत्रियों का विवाह जहां तीन ज्येष्ठ मिले तो वहां त्रिज्येष्ठ नामक दोष होने के कारण विवाह न करने का विधान है। ज्येष्ठ मास में गृह निर्माण को निषिद्ध घोषित किया गया है।

समग्रतः जेठ का महीना आचार संहिता,संयम, अनुशासन और मर्यादा का संदेश देता है। साथ ही यह भी संदेश देता है कि- इंसान उम्रदराज होने से बड़ा नहीं होता बल्कि बड़ा या ज्येष्ठ वह अपने बड़प्पन से बनता है -

जिंदगी ज़मीन में गुजारिए,
जनाब हवा में नहीं।

जिंदगी अपनों के बीच रहकर गुजारिए, यार दवा में नहीं।

गांव की कहानी : कमलनारायण

पुड़ागढ़ में रियासतकालीन साक्ष्य

सरायपाली से 16 कि मी दक्षिण की ओर पुड़ागढ़ नामक ग्राम है। यहां भैंना राजवंश का उजड़ा हुआ प्राचीन गढ़ है। भैंना राजाओं ने अपने रण कौशल के अनुरूप सामरिक महत्व को ध्यान में रखते हुए इन गढ़ों का निर्माण विशिष्ट स्थानों पर किया था। इस गढ़ की आकृति गोलाकार है तथा मध्य का भाग वर्गाकार है। वर्तमान पोड़ागढ़ ग्राम प्राचीन गढ़ से कुछ दूरी पर बसा है। गढ़ में प्रवेश एवं निर्गम हेतु दो द्वार थे। इस गढ़ में चदुर्थिक गहरी खाईयां थी जो अब पट चुकी हैं। सामने की ओर खाइयों के अल्प अवशेष बचे हुए हैं। आज भी गढ़ के समीप एक शिलाखंड को घूमेर देवता के नाम से पूजा जाता है। इस गढ़ का अर्थ ' जला हुआ' होता है। इससे प्रतीत होता है कि इस गढ़ पति के परिजनों का दुखद अंत हुआ होगा। आज भी यहां खुदाई से गढ़ और सैन्य बल से जुड़ी अनेक वस्तुएं प्राप्त होती रहती हैं। मूर्तियों को नलयुगीन होने का अनुमान लगाया जाता है।

लोक नाट्य

डा. उग्रसेन कन्नौजे

छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य के प्रकार

छत्तीसगढ़ी लोक नाट्य को विद्वानों ने दो प्रकार से विभाजित किया है। जिसमें पहला कोहलीय लोक नाट्य में महिलाओं का जाना वर्जित होता है। नारी पात्र की भूमिका पुरुष ही निभाता है। दूसरा कौशिकी लोक नाट्य में महिलाओं की भूमिका अनिवार्य होती है। इसी तरह दो रूप प्रधानतया प्रहसनात्मक और नृत्यनाट्यत्मक में भी विभक्त करते हैं। पहले रूप में जन जन के अनुरंजन के लिए किसी ऐसी घटना के अभिनय को विषय बनाया जाता है जिसे सुनकर या देखकर दर्शक लोटपोट हो जाते हैं। इसमें नृत्य का अभाव रहता है। इसके दूसरे रूप में किसी सामाजिक अथवा पौराणिक घटना को लेकर अभिनीत किए जाते हैं। इसमें संगीत, नृत्य और अभिनय की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। इस प्रकार नृत्य,गीत तथा अभिनय सब मिलकर समां बांध देते हैं जिसके कारण दर्शक लोक नाट्य का भरपूर आनंद ले पाते हैं।

लेखकों से..

छत्तीसगढ़ की लोक कला, लोक साहित्य, पर्यटन, तीज त्योहार, गांव की कहानी, ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैलचित्र, भित्तिचित्र, कला कृति और पुरखा के सुरता के साथ ही सम सामयिक विषयों पर अधिकतम 500 शब्दों पर लेख भेजें- **Choupalharibhoomi@gmail.com**

सफर के दौरान गाया जाता है गड़हा ददरिया

लोकगीत

राम कुमार वर्मा

छत्तीसगढ़ के मैदानी क्षेत्रों में निवास करने वाले लोक गीतों में ददरिया का आनंद लेते हैं। ददरिया को जवान हो बूढ़े सभी किसी भी वक्त कहीं भी गुनगुनाते देखे जा सकते हैं। ददरिया गायन के विभिन्न स्वरूप होते हैं जिनको विभिन्न त्योहारों और मांगलिक कार्यों में भी गाए जाते हैं। इसमें गड़हा ददरिया का अपना अलग महत्व है।

इस ददरिया को सफर के दौरान गाया जाता है। पहले के लोग पैदल या बैलगाड़ी में या सामूहिक रूप से कहीं भी आते और जाते समय गाते थे। ददरिया गायन में अधिकतर नायक और नायिका के बाद सवाल और जवाब शामिल होते हैं। लेकिन यहां इस ददरिया की विशेषता होती है कि इसमें सवाल जवाब शामिल नहीं होते हैं। इसमें गायक और गायिका दोनों सामूहिक रूप से न गाकर एकल गायन करते हैं। कहीं कहीं सामूहिक रूप से दोनों मिलकर भी गाते हैं। इसी ददरिया का एक रूप देखते हैं जब दूल्हा बारात प्रस्थान के लिए तैयार होता है तो युवतियों द्वारा विवाह मंडप में घूम घूम कर ददरिया गायन किया जाता है। इस समय गायन को गौतरी कहा जाता है। देखें यहां एक गायन -

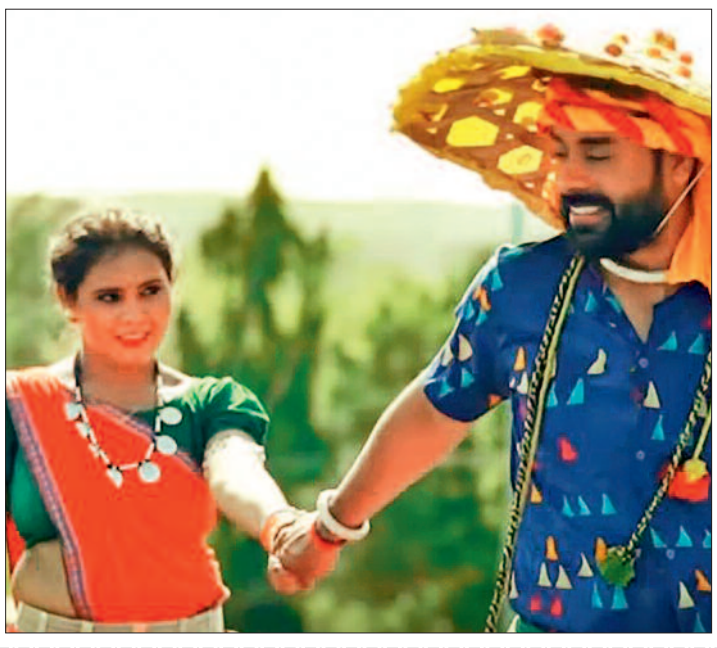

राम धरे धनुष लक्ष्मण धरे बान,
सीता माई के खोजन बर,
निकलगे हनुमान,

इसी तरह एक और देखें ददरिया को -

एक पेड़ आमा छत्तीस पेड़ जाम,
देवी दाई के मंदिर में हावे भगवान।

आदिवासी अंचल में विवाह के समय महिलाओं द्वारा सवाल जवाब परक ददरिया गाए जाते हैं। गाने की हर पंक्ति में सवाल जवाब होते रहते हैं -

कोन बन आमा रे कोन बन जाम
कोन बन ले ओ निकले
मोर लक्ष्मण राम

इसी कड़ी में एक और गीत को हम देखते हैं जो लोगों की जुबान से गाते देखे जाते हैं -

धाने ल लुवे गिरे ल कंसी
भगवान के मंदिर में
बाजत हे बंसी।